सी एन सुब्रह्मण्यम

हीरो कौन?

चित्र 1: शेर से लड़ता वीर और उसके कुत्ते

शेर से लड़ना कोई सामान्य बात नहीं है। और वो भी ऐसे समय जब तोपें-बन्दूकें नहीं थीं। उस वक्त लड़ने के लिए सिर्फ तीर, भाले ही हुआ करते थे। अक्सर जंगल में ढोर चरा रहे चरवाहों का सामना खूँखार शेरों से हो जाता था। सामान्य चरवाहे तो शायद शेर को देखते ही भाग जाते होंगे या पेड़ पर चढ़ जाते होंगे। कुछ ही लोग अपनी जान की बाज़ी लगाकर शेर से लड़कर अपने जानवर बचाते होंगे। ऐसे कई वीर चरवाहे इस लड़ाई में शहीद हो जाते थे। गाँव के लोग उनकी याद में पत्थर गाड़कर उसकी पूजा करते थे। इन पत्थरों को "वीर कल" कहते थे (अँग्रेज़ी में "हीरो स्टोन")। वे असली हीरो जो थे।

लोगों की मान्यता थी कि ये वीर पीढ़ी दर पीढ़ी उनके गाँव व जानवरों की रक्षा करेंगे। यह प्रथा बहुत पुरानी है। तमिलनाडु के चेंगम तहसील से मिले इस जीवन्त चित्रण वाले पत्थर को देखो। यह शायद आज से 1300 साल पहले बना था।

चित्र 1 में शेर और मनुष्य व कुत्तों के बीच के संघर्ष को कितने जानदार तरीके से तराशा गया है। क्या तुम इसे देखकर उस वीर, शेर और कुत्तों की भावनाओं को समझ सकते हो?

इसी तरह का एक पत्थर एक और गाँव से मिला है। इस पर लिखा है:

"राजा विजय महेन्द्रवर्मन् के बत्तीसवें साल में पोन मोदनार का सेवक विन्नन बड़ुगन शेर से लड़कर मरा – उसका पत्थर।"

महेन्द्रवर्मन् काँचीपुरम के पल्लव वंश का राजा था। वह लगभग 600 ईसवीं में शासन करता था। उसके काल में दूर-दराज जंगल के किनारे बसे एक

चित्र 3: कुत्तों की याद में बना "वीर कल"

चित्र 2: चोरों से लड़ता वीर

पशुपालक गाँव में पोन मोदनार रहते थे। इनका नौकर शेर से लड़ता हुआ मरा था।

महेन्द्रवर्मन् भी खुद को एक पराक्रमी राजा मानता था। अपनी प्रशंसा में उसने शिलालेख भी खुदवाया था। लेकिन गाँव के लोगों ने उसकी बजाय एक नौकर चरवाहे के लिए स्मारक बनाया। और हज़ार साल तक उसकी पूजा भी की।

यहाँ मैं तुम्हें एक और चित्र (चित्र 2) दिखा रहा हूँ। इसमें लड़ाई शेर से नहीं चोरों से है। इसे ध्यान से देखो। इसमें क्या-क्या बातें बताई गई हैं?

ऐसे वीरों को लोग सदियों तक पूजते रहे और अपने गाँव का रक्षक मानते रहे। राजस्थान के तेजा जी या दक्षिण के मदुरै वीरन शायद इसी तरह लोक देवता बने।

कहीं-कहीं तो शेर या चोरों से लड़कर मरने वाले कुत्तों की याद में भी "वीर कल" बने। (चित्र 3)